Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Det.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 06/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,

Topic -

असामान्य मनोविज्ञान का महत्त्व **(Importance of Abnormal Psychology)**

मानव जीवन को सन्तुलित बनाए रखने तथा समायोजन को बेहतर बनाने में असामान्य मनोविज्ञान का अध्ययन निश्चित रूप से लाभकारी होता है। अतः इसके महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं से देखा जा सकता है-

(1) असामान्य व्यवहारों के कारणों का ज्ञान **(Knowledge of Causes of Abnormal Behaviours**) असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन से विविध प्रकार के असामान्य व्यवहारों या मानसिक विकृतियों के वास्तविक कारणों को समझने में सहायता मिलती है। इनसे सम्बन्धित अध्ययनों के प्रकाश में हम यह जान सके हैं कि ऐसे व्यवहारों या विकृतियों के विकास में जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों का हाथ होता है। इस ज्ञान के आधार पर हम इन व्यवहारों या विकृतियों के निरोध तथा उपचार में सफल हो सके हैं।

(2) अन्धविश्वासों का उन्मूलन **(Eradication of Superstitions**) असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन से भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्धविश्वासों से हमें मुक्ति मिली है। असामान्य मनोविज्ञान के विकास से पूर्व असामान्यता या असामान्य व्यवहार को भूत-प्रेत का प्रभाव समझा जाता था। उस समय ऐसा माना जाता था कि असामान्य व्यवहार करने वाले व्यक्ति के शरीर में भूत-प्रेत की शक्ति है।
इसी विश्वास के आधार पर असामान्य व्यवहार से पीड़ित व्यक्ति को विभिन्न प्रकार से शारीरिक कष्ट देकर प्रेतशक्ति को उसके शरीर से बाहर निकालने का प्रयास किया जाता था। इस अमानवीय उपचार के कारण न जाने कितने लोगों की मृत्यु तक हो जाती थी। लेकिन, असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन से आज मानव ने इस अन्धविश्वास पर विजय पा ली है तथा उनमें असामान्यता के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित हुआ है।

(**3)** असामान्य व्यवहार के प्रति सही दृष्टिकोण **(Correct Approach to Abnormal Behaviour)** असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन से व्यक्तियों में असामान्यता / असामान्य व्यवहार के प्रति सही दृष्टिकोण का विकास हुआ है। मानव की गलत धारणा (Misconception) कि असामान्य व्यवहार का आधार, भूत-प्रेत तथा जादू-टोना है, अब दूर हो चुकी है। अब वह जान चुका हैं कि असामान्य व्यवहार एक मानसिक रोग है। अतः जिस प्रकार सही उपचार से शारीरिक रोग ठीक हो जाते है, ठीक उसी प्रकार उपयुक्त उपचार से असामान्यता को भी ठीक किया जा सकता है तथा असामान्य व्यक्ति को पुनः सामान्य बनाया जा सकता है।

(4) सामान्य एवं असामान्य व्यक्तियों के बीच विभेदन **(Differentiation between Normal and Abnormals**) असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन से सामान्य तथा असामान्य व्यक्तियों के मध्य अन्तर समझने में भी सुविधा होती है। सामान्य तथा असामान्य व्यवहार के लक्षणों या कसौटियों को समझ लेने के बाद हम सरलता से जान जाते हैं कि साभान्य कौन है तथा असामान्य कौन है। इस ज्ञान से हम स्वयं को एवं दूसरे व्यक्तियों को असामान्य व्यवहारों से बचाने का प्रयास करते हैं।

(5) विशिष्ट व्यवहार विकृतियों का निरूपण **(Diagnosis of Specific Behavior Disorders)** असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन से विविध प्रकार के व्यवहार या मानसिक विकृतियों की पहचान सम्भव हुई है। इसके अध्ययन से हमें पता चलता है कि प्रत्येक प्रकार की व्यवहार विकृतियों या मानसिक विकृतियों के कुछ निश्चितलक्षण होते हैं। इससे यह निश्चित करना सम्भव हो जाता है कि अमुक् व्यक्ति किस मानसिक रोग से पीड़ित है। उसी के अनुरूप रोगी का उपचार करके उसे पुनः सामान्य बनाना सम्भव होता है।

(6) असामान्यता का निरोध एवं उपचार **(Prevention and Treatment**) असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन के आलोक में भिन्न-भिन्न व्यवहार विकृतियों की रोकथाम तथा उपचार सम्भव है। इसमें उन विधियों या प्रविधियों का उल्लेख किया जाता है, जिनकी सहायता से व्यवहार विकृतियों की रोकथाम की जा सकती है। इसी प्रकार इसमें उन चिकित्सा प्रविधियों (Therapeutic Techniques) का उल्लेख किया जाता है, जिनका उपयोग करके व्यवहार विकृतियों का निराकरण किया जा सकता है। वर्तमान समय में देश तथा विदेशों में कई मानसिक चिकित्सालय उपलब्ध हैं, जहाँ असामान्य व्यक्तियों का उपचार करके उन्हें पुनः सामान्य बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

(**7)** मानसिक दुर्बल बच्चों का कल्याण **(Welfare of Mentally Retarded Children)** असामान्य मनोविज्ञान में मानसिक दुर्बल बच्चों के कल्याण के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है। इसके अध्ययन से माता-पिता, शिक्षक, समाज-सुधारकों आदि को इस बात की जानकारी हो जाती है कि वे मानसिक दुर्बल बच्चों के उपचार तथा पुनर्वास (Rehabilitation) के लिए किस प्रकार सहायक हो सकते हैं तो वे अपने-अपने तरीके से उपयुक्त (Adequate) योजनाओं का आयोजन करके ऐसे बच्चों के कल्याण में सहायक बनते हैं।

(8) विशिष्ट पेशेवरों के लिए सहायक **(Helpful for Certain Professionals**)-कुछ विशेष पेशेवरों के लिए असामान्य मनोविज्ञान का अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है। इसके अध्ययन से वकील, जेल अधिकारी तथा जज को अपने-अपने व्यावसायिक दायित्व को सफलतापूर्वक निभाने में सहायता मिलती है। इसी प्रकार चिकित्सकों, शिक्षकों एवं समाज-सुधारकों को इसके अध्ययन से इस बात की जानकारी मिलती है कि असामान्य व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

(**9)** साधारण घटनाओं की व्याख्या के लिए **(For Understanding Everyday Phenomena)** असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान व्यक्ति को दैनिक जीवन की सामान्य घटनाओं की व्याख्या करने में सहायता करता है। हम सब यह जानते है कि दैनिक जीवन में व्यक्ति कई भूलें करता हैं। इसी प्रकार वह प्रायः रात्रि में तरह-तरह के स्वप्न देखते हैं। असामान्य मनोविज्ञान के विकसित होने के पूर्व हम इन घटनाओं की सही व्याख्या करने में अक्षम थे। और इन्हें आकस्मिक (Accidental) एवं संयोगवश (By Chance) मान कर सन्तुष्ट हो जाते थे। लेकिन, असामान्य मनोविज्ञान के विकास के पश्चात् व्यक्ति को सही-सही जानकारी प्राप्त हो सकी है। उसे पता चल गया है कि इन घटनाओं के पीछे अचेतन प्रेरणाओं (Unconscious Motivations) का हाथ होता है।

(**10)** सफल तथा स्वस्थ समायोजन में सहायक **(Helpful in Effective and Healthy Adjustment**)-असामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन की सहायता से व्यक्ति को अपने पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक, वैवाहिक तथा व्यावसायिक समायोजन को सफल तथा स्वस्थ बनाने में सहायता मिलती है। क्योंकि असामान्य मनोविज्ञान से सम्बन्धित अपने ज्ञान के आलोक में वह स्वयं तथा दूसरों के व्यवहारों का मूल्यांकन निष्पक्षता से करने में सफल होता है, जिससे उसका मानसिक सन्तुलन बना रहता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि असामान्य मनोविज्ञान का महत्त्व जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्पष्टतः देखा जाता है।